ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 263-279

हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में महिलाओं की भागीदारी का सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

वन्दना पूनिया
संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र
गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, हरियाणा, भारत
ईमेल : vbpunia@gmail.com

सारांश

हरियाणवी समाज में महिलाओं की भूमिका केवल सांस्कृतिक प्रस्तुति तक सीमित नहीं हैय वे लोक परंपराओं की संवाहक और सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी रही हैं। हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाएँ स्त्रियों के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का आईना हैं, जहाँ पारंपरिक सीमाओं के भीतर रहकर भी वे प्रतिरोध, एकजुटता और सांस्कृतिक आत्म–अभिव्यक्ति का सशक्त रूप प्रस्तुत करती हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य हरियाणवी लोक संस्कृति की विविध प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका, उसकी अभिव्यक्ति, सीमाएँ और सशक्तिकरण के पहलुओं का अध्ययन करना है। गुणात्मक पद्धति के तहत, रोहतक, गुरुग्राम, पानीपत और भिवानी के प्रमुख लोक सांस्कृतिक केंद्रों में चयनित प्रस्तुतियों का विश्लेषण किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि लोक प्रदर्शन कलाएँ स्त्रियों के अस्तित्व को सामाजिक पुनरुत्पादन और सीमाओं के साथ–साथ प्रतिरोध और सशक्तिकरण के द्वैतात्मक रूप में प्रदर्शित करती हैं। संवाद, प्रतीक और प्रस्तुति शैली लिंग आधारित असमानताओं को उजागर करती हैं, जबकि आधुनिक प्रस्तुतियाँ स्त्रियों की भूमिका को पुनर्परिभाषित और पारंपरिक सीमाओं से ऊपर उठने का अवसर देती हैं।

मुख्य शब्द: हरियाणवी लोक संस्कृति, प्रदर्शन कलाएँ, नारी सहभागिता, सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, लिंग आधारित विश्लेषण

शोध की पृष्ठभूमि : हरियाणवी लोक संस्कृति भारतीय लोक परंपराओं की धरोहर है, जिसमें सांग, फाग, रागनी, जैसी प्रदर्शन कलाएँ लोक जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत करती हैं। इन कलाओं में स्त्री की भूमिका सामाजिक दृष्टि से जटिल और बहुआयामी है। एक ओर नारी इन

कलाओं की आत्मा है । गीतों की रचयिता, प्रस्तोता और भावनाओं की संवाहकय वहीं दूसरी ओर पितृसत्तात्मक संरचनाएँ उसकी अभिव्यक्ति पर नियंत्रण भी लगाती हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि हरियाणवी समाज में महिलाओं की भूमिका केवल सांस्कृतिक प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि वे लोक परंपराओं की संवाहक और परिवर्तन की वाहक दोनों रही है । हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाएँ महिलाओं के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन का आईना हैं, जहाँ पारंपरिक सीमाओं के भीतर रहकर भी स्त्रियाँ प्रतिरोध, एकजुटता और सांस्कृतिक आत्म–अभिव्यक्ति का सशक्त रूप निर्मित करती हैं। लोककलाएँ हरियाणा में महिला सशक्तिकरण की मौन लेकिन प्रभावी आवाज बनी हुई हैं. महिलाओं की भागीदारी सांस्कृतिक संरक्षण और समाज में सशक्तिकरण दोनों में सहायक होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका, अभिव्यक्ति और सामाजिक नियंत्रण के ताने–बाने का लिंग–संवेदनशील विश्लेषण करना है। इन कलाओं में स्त्रियों की भागीदारी कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं प्रतीकात्मक रूप में दृष्टिगोचर होती है। प्रस्तुत शोध का उद्श्य यह विश्लेषण करना है कि हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका पितृसत्तात्मक संरचनाओं का पालन करने या उनका विस्तार करने वाली है, या फिर यह प्रतिरोध, सृजन और सामाजिक परिवर्तन की संवाहक के रूप में कार्य करती है। यह शोध नारी की इन कलाओं में भूमिका का विश्लेषण करता है कि क्या वह पितृसत्तात्मक संरचना का विस्तार है या प्रतिरोध की संवाहक। मंच पर स्त्री की उपस्थिति, संवादों की भाषा, प्रतीकों की संरचना और प्रस्तुति शैली के लिंग–आधारित विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि लोक मंचों पर स्त्री की अभिव्यक्ति सामाजिक मर्यादाओं से बंधी हुई है, फिर भी उन्हीं सीमाओं के भीतर वह अपनी स्वतंत्र आवाज निर्मित करती है।अध्ययन का तर्क यह है कि लोक प्रदर्शन कलाएँ न केवल सांस्कृतिक पहचान और मूल्य संरचना का प्रतिबिंब हैं, बल्कि सामाजिक और लैंगिक परिवर्तन को भी प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र मे लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करने का प्रयास सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक तीनों स्तरों पर किया है।

साहित्य समीक्षा : भावना और शालिनी, 2023 ने भी इसका समर्थन किया है की हरियाणवी लोक गीतों में महिलाएं अपने दैनिक जीवन, दुख और सामाजिक दबावों को व्यक्त करती हैं। ये गीत पारंपरिक सामाजिक मर्यादाओं और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के भीतर महिलाओं की सीमित भूमिका को दर्शाते हैं, साथ ही उनके प्रतिरोध और सशक्तिकरण के संकेत भी प्रदान करते हैं मनीषा, 2023 ने अपने शोध मे लिखा है की पारंपरिक रागिनी और सांगों में महिलाओं की भूमिका अक्सर पुरुषों द्वारा निभाई जाती थी, जो पितृसत्तात्मक समाज की संरचनाओं को दर्शाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं को सार्वजनिक प्रदर्शन कलाओं में सक्रिय भागीदारी से वंचित रखा गया था। सिंह और कुमार: 2019 का भी यही कहना है कि ग्रामीण लोक कला में महिलाओं की भागीदारी पर परिवार और समुदाय की मान्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महिलाओं की भागीदारी अधिकतर सामूहिक उत्सव और फग जैसे गीतों में होती है, जबकि सांग और रागनी जैसी प्रस्तुतियों में पुरुषों द्वारा उनके प्रतिनिधित्व की परंपरा बनी रहती है। चोपड़ा (2018) के अनुसार, लोक कलाओं में प्रत्यक्ष भागीदारी से महिलाओं को सामूहिक पहचान और सामाजिक सम्मान मिलता है, जो उनके आत्म–सम्मान और सशक्तिकरण से जुड़ा होता है। शर्मा, 2020; यादव, 2021:शोध के अनुसार, लोक कला में महिलाओं की भूमिकाएँ परंपरागत सांस्कृतिक

प्रतीकों और धार्मिक रीति–रिवाजों से नियंत्रित होती हैं। उदाहरण स्वरूप सांग और रागनी में महिलाओं की भूमिकाएँ अक्सर आदर्श पत्नी, भक्त या मर्यादित स्त्री के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। गुप्तारू2016 ने यह उल्लेख किया कि महिलाओं की भागीदारी लोक कला में विशेषकर उत्सव और सामाजिक आयोजनों में सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में सहायक होती है। मीना और राठी रू 2019 के अध्ययन में पाया गया कि पुरुष कलाकार अक्सर महिलाओं की भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं (जैसे सांग और रागनी में), जो पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। वर्मा (2020) के अनुसार, फाग और अन्य सामूहिक लोक नृत्यों में महिलाओं को अधिक स्वतंत्र अभिव्यक्ति की अनुमति होती है, लेकिन यह भी सांस्कृतिक और सामाजिक मानकों के तहत सीमित रहती है खंडेलवाल, 2018, जोशी, 2021 से पता चलता है कि लोक कला में महिलाओं की भूमिकाएँ भावनात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक प्रतीकात्मक होती हैं। उनके संवाद और प्रस्तुति शैली महिलाओं के सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक अपेक्षाओं का प्रतिबिंब हैं। सामूहिक लोक कलाओं में (जैसे फाग) महिलाओं की भागीदारी उन्हें व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता का अवसर देती है, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास बढ़ता है। राजेन्द्र शर्मा, 2012 लिखते हैं "लख्मीचंद के सांगों में नारी पात्रों की भूमिकाएँ पुरुषों ने इतनी संवेदनशीलता से निभाईं कि दर्शक स्त्री के स्वरूप को वास्तविक मान बैठते थे। लख्मीचंद के सांग 'मीराबाई' में जब पुरुष कलाकार मीरा का भजन गाते थे कृ 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई' कृ तो दर्शक भूल जाते थे कि यह एक पुरुष गा रहा है। सुभाष यादव, 2018 ने अपनेशोध प्रबंध्य में लिखा "हरियाणा के सांग में नारी की आवाज, पुरुषों की जुबान से निकली यह कला की त्रासदी भी थी और उसकी खूबसूरती भी।हरियाणवी सांग में स्त्री पात्र का अभिनय पुरुषों द्वारा केवल अभिनय नहीं, बल्कि संवेदना का पुनर्जन्म था। बाल किशन दहिया, 2020 का मत है की स्त्री मंच पर अनुपस्थित थी, पर उसके भाव, उसकी पीड़ा, उसका प्रेम सांग में सर्वत्र उपस्थित था। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है किरू लोक कला में महिलाओं की भागीदारी पर सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक मानदंडों का प्रभाव होता है। पुरुषों द्वारा स्त्री पात्रों का प्रतिनिधित्व पितृसत्तात्मक संरचना को दर्शाता है।

योगदान: सामूहिक नृत्य और गीत जैसे फाग में महिलाओं को कुछ हद तक स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। नारी की भागीदारी को समझना नारीवादी दृष्टिकोण और सामाजिक विमर्श के नए आयाम प्रस्तुत करने में सहायक होगा, जबकि कलाकारों, ग्रामीण महिलाओं और लोकनृत्य मंडलियों के अनुभव और दृष्टिकोण का गुणात्मक अध्ययन इस विषय की गहराई और विश्वसनीयता को सुनिश्चित करेगा। यह शोध लोक कला और नारी अध्ययन के क्षेत्र में अनुसंधान की खाई को भरने के साथ हरियाणवी लोक संस्कृति में स्त्री की भूमिका को पुनर्परिभाषित करने में योगदान देगा। हरियाणवी लोक संस्कृति में स्त्री की उपस्थिति केवल सांस्कृतिक प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और लैंगिक संतुलन की अभिव्यक्ति भी है।

सैद्धांतिक आधार: इस शोध का सैद्धांतिक आधार तीन प्रमुख दृष्टिकोणों पर आधारित है:

1. **सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक सिद्धांत :** लोक कला समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना का प्रतिफलन करती है। पारंपरिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत (पार्सन्स, 1951; हॉर्टन, 1982) यह बताते हैं कि कलाएँ समाज के मूल्यों, नियमों और

अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाएँ न केवल सांस्कृतिक मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सामाजिक संरचना और सामूहिक अनुभवों का संवाहक भी हैं। इस दृष्टिकोण से नारी की सहभागिता को समझना आवश्यक है कि वह समाज के लिंग–आधारित ढाँचों को कैसे स्वीकार करती है या चुनौती देती है।

2. **लैंगिक अध्ययन और नारीवादी सिद्धांत :** नारीवादी दृष्टिकोण (बट्लर, 1990;) महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भूमिकाओं का विश्लेषण करता है। लोक कला में नारी की भूमिका को इस दृष्टिकोण से समझा जा सकता है कि वह पितृसत्तात्मक संरचनाओं का विस्तार करती है या प्रतिरोध और सशक्तिकरण की संवाहक है। नारीवादी सिद्धांत नारी की पहचान, अभिव्यक्ति और सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझने में सहायक होता है।
3. **सृजनात्मक अभिव्यक्ति और लोक कला सिद्धांत:** लोक कला सिद्धांत (ब्लूमफील्ड, 1978; रोथिन, 2004) यह मानता है कि लोक कलाएँ केवल सांस्कृतिक वस्तु नहीं हैं, बल्कि समाज की जीवनधारा और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। नारी इन कलाओं में न केवल अभिनय करती है बल्कि अपनी संवेदनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक ज्ञान को समाज के सामने प्रस्तुत करती है।

इन तीन सिद्धांतों के माध्यम से यह शोध यह समझने का प्रयास करेगा कि हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान और लैंगिक दृष्टिकोण से किस प्रकार परिभाषित और विकसित होती है। यह नारी की सहभागिता के माध्यम से समाज में उसके सशक्तिकरण, प्रतिरोध और सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषण करेगा।

शोध के उद्देश्य : इस शोध का मुख्य उद्देश्य हरियाणवी लोक संस्कृति की विविध प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका, उसकी अभिव्यक्ति, सीमाएँ और सशक्तिकरण के पहलुओं का अध्ययन करना है।

विशेष रूप से निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं —

- हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में स्त्री सहभागिता का सामाजिक स्तर पर विश्लेषण
- हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति का सांस्कृतिक स्तर पर विश्लेषण
- हरियाणवी लोक संस्कृति में संवादों, प्रतीकों और प्रस्तुतियों का लिंग आधारित विश्लेषण

शोध पद्धति: यह शोध गुणात्मक अनुसंधान पर आधारित है, जिसमें हरियाणवी लोक कलाओं के माध्यम से नारी की भूमिका, अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक नियंत्रण की व्याख्या की जाएगी। शोध का भौगोलिक क्षेत्र हरियाणा राज्य के प्रमुख लोक–सांस्कृतिक केंद्रोंकुरोहतक, गुरुग्राम, पानीपत, भिवानी आदिकृतक सीमित है, जिनका चयन इस उद्देश्य से किया गया है कि लोक कलाओं के विभिन्न रूपों और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित विविध दृष्टिकोण प्राप्त हो सकें। अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण चयन (Purposive Sampling) पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत ऐसे कलाकारों, लोक–प्रदर्शन समूहों और सांस्कृतिक आयोजनों को चुना गया है जो नारी

के लोक–सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण को प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्त करते हैं। डेटा संग्रह के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन जैसे लाइव मंच प्रस्तुतियाँ, लोक उत्सव और प्रशिक्षण सत्रों के साथ–साथ द्वितीयक स्रोतों जैसे लोकगीत, रागनी लिपियाँ, वीडियो रिकॉर्डिंग, तथा प्राचीन और आधुनिक लोक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण थीमैटिक विश्लेषण और सामग्री विश्लेषण के माध्यम से किया जाएगा। थीमैटिक विश्लेषण के अंतर्गत लोक कलाओं में नारी की भूमिका, अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक नियंत्रण से संबंधित प्रमुख थीमों की पहचान और विवेचना की जाएगी, जबकि सामग्री विश्लेषण के माध्यम से संवाद, प्रतीक और गीतों में निहित लिंग आधारित नियंत्रण, सांस्कृतिक संकेतों और सामाजिक संदेशों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

संचालनात्मक परिभाषाएँ : संचालनात्मक परिभाषाएँ वे व्यावहारिक व्याख्याएँ हैं जिनके माध्यम से शोधकर्ता अपने अध्ययन की प्रमुख अवधारणाओं को स्पष्ट, मापनीय और विश्लेषण योग्य रूप में परिभाषित करता है।

- **हरियाणवी लोक संस्कृति** : हरियाणा की पारंपरिक जीवन शैली, लोकाचार, और सामूहिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँकृजैसे सांग, फाग, रागनी, लोकगीत, लोकनृत्य, और धार्मिक अनुष्ठान जो क्षेत्रीय पहचान और सामाजिक एकता का प्रतीक हैं।
- **प्रदर्शन कलाएँ** (Performing Arts): लोक जीवन के वे मंचीय, गायन, नृत्य और अभिनय प्रधान माध्यम जो समाज की भावनाओं, धार्मिकता, संघर्ष और चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। हरियाणवी सांग, फाग, और रागिनी, इसी श्रेणी की प्रमुख प्रदर्शन कलाएँ हैं।
- **नारी सहभागिता:** सांगीतिक, नाट्य, और सामूहिक कलात्मक आयोजन में महिलाओं की उपस्थिति, भूमिका, और अभिव्यक्ति का स्तरकृचाहे वह प्रत्यक्ष प्रदर्शन हो या किंवदंती, प्रतीक और स्वरों में अप्रत्यक्ष उपस्थिति।
- **सामाजिक परिप्रेक्ष्य:** सामाजिक परिप्रेक्ष्य से आशय लोक जीवन की उस संरचना से है, जिसमें व्यक्ति की सामाजिक भूमिका, स्थिति, दायित्व और व्यवहार समाज–निर्धारित मूल्यों और मानदंडों से नियंत्रित होते हैं।
- **सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य** : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से अभिप्राय उस जीवन–व्यवस्था से है, जिसमें लोक संस्कृति के प्रतीकों, गीतों, नाटकों, कथाओं और परंपराओं के माध्यम से समाज के मूल्यों और विचारों की अभिव्यक्ति होती है।
- **लैंगिक परिप्रेक्ष्य:** लैंगिक परिप्रेक्ष्य से अभिप्राय समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच भूमिकाओं, अधिकारों, अवसरों और अभिव्यक्तियों की समानता या असमानता से है। यह परिप्रेक्ष्य अध्ययन करता है कि लैंगिक विभाजन कैसे सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक संरचना और मानसिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।
- **पितृसत्तात्मक संरचनाओं का पुनरुत्पादनरू** उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें समाज में पुरुष प्रधान नियम और लिंग असमानताएँ लगातार दोहराई जाती हैं।

शोध की सीमाएँ

- यह अध्ययन मुख्य रूप से हरियाणा के लोक प्रदर्शन कलाओं पर केंद्रित है।
- सभी प्रस्तुतियों और कलाकारों का अध्ययन संभव नहींय इसलिए चयनित नमूना अध्ययन का आधार होगा।
- डेटा मुख्य रूप से गुणात्मक होगा, जिससे सांख्यिकीय सामान्यीकरण सीमित रहेगा।

विश्लेषण और चर्चा : हरियाणवी लोक संस्कृति की बहुआयामी अभिव्यक्ति का विश्लेषण तीन भागों मे विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं

1. हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में स्त्री सहभागिता का सामाजिक स्तर पर विश्लेषण
2. हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति का सांस्कृतिक स्तर पर विश्लेषण
3. हरियाणवी लोक संस्कृति में संवादों, प्रतीकों और प्रस्तुतियों का लिंग आधारित विश्लेषण

1. हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में स्त्री सहभागिता का सामाजिक स्तर पर विश्लेषणः

हरियाणवी लोक कला में स्त्री की भूमिका का सामाजिक परिप्रेक्ष्य से अध्ययन का प्रमुख उद्देशय समाज में महिलाओं की स्थिति, सम्मान, जिम्मेदारियाँ और नियंत्रण हरियाणवी लोक कला में किस प्रकार प्रतिबिंबित होते हैं। यह दृष्टिकोण लोक प्रदर्शन कलाओं में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, भागीदारी और स्वीकृति को परिलक्षित करता है। हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाएँ अपने स्वरूप में सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं और लिंग आधारित भूमिकाओं का सशक्त दर्पण हैं। निम्नलिखित विश्लेषण इस तथ्य को पुष्ट करता है कि जहाँ हरियाणवी लोक परंपराएँ स्त्री की संवेदनशीलता और भावनात्मक शक्ति को मान्यता देती हैं, वहीं वे उसे परंपरागत मर्यादाओं में भी बाँधती हैं। प्रत्यक्ष अवलोकनध दस्तावेजी अध्ययन के अनुसार, हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं सांग, फाग, रागनी में नारी की भूमिका द्वैतात्मक है मंच पर स्त्री पात्रों की भूमिका परंपरागत सामाजिक मर्यादाओं और पितृसत्तात्मक संरचना के अनुसार सीमित रहती है।

तालिका 1.1
हरियाणवी प्रदर्शन कलाओं में स्त्री सहभागिता का संक्षिप्त विवरण

क्रम	प्रदर्शन कला	स्त्री की भागीदारी का स्वरूप	प्रमुख लिंग संकेत / प्रतीक	उदाहरण ;गीत / संवाद सेद्ध
	सांग	अप्रत्यक्ष ;स्त्री पात्रों की भूमिका पुरुष निभाते हैंद्ध	पतिव्रता, त्याग, मर्यादाधपितृसत्तात्मक आदर्श स्त्रीध नारी की पूज्य छवि पारंपरिक भूमिकाओं के दायरे में सीमितध्ग्रामी ण महिला की सामाजिक सजगता और जीवन दृ ष्टिध्लोक नैतिकता के दायरेध समाज की दृष्टि से नारी का मूल्यांकनध प्रेम और प्रतिरोध का स्वर	सावित्री बोली धरमराज सुण, मैं पतिव्रता नारी सच्ची। ध पति संग बिना स्वर्ग भी ना भावे, चाहे नरक विच पक्की। 'सत्यवानदृ सावित्री सांग रानी तारा बोली हरीश, धरम साँच को निभायो। ध बेच दो मोए हमाँ, पर झूठ न मुख सों आयो। 'राजा हरिश्चंदर सांग "ज्याणी की जुठाणी बोली, ओ ज्याणी तू ना चाल धोकै। ध चोरी तै भलु खेती भली, पर भूख न मरे कोई।" ' ज्याणी चोर सांग "लीलो बोली चमन तूं मन्नै भूलावे मत दे, ध गाँव के लोग बातें बनावें, इज्जत का ध्यान रख ले।" ' लीलो चमन सांग "पंच बोले, औरत घर की लाज है, बाहर की हवा लागे तो कलंक हो जाय।" लीलो चमन सांग हीर बोली, रांझा तूं सच्चा साजन, जग ताने पर मैं ना डरूँ। ध इज्जत की खातिर झूठे बंधन मैं ना धरूँ।" ;हीरदृरांझाद्ध
2	फाग/ पारम्परिक नृत्य	सामूहिक गायन में स्त्री भागीदारी	प्रेम, उल्लास, हास्य, पारिवारिक, हास्य, सामाजिक संवाद, शरीर और सौंदर्य का उत्सव	ऊंचा रेड़ा काकर हेड़ा विच विच बोदी केसर, ब्याहे ब्याहे राज करेंगे रांडा का पणमेसर. छोटे छोरे कै न जांगी, बालम याणे कै न जांगी, देस बिराणै कै न जांगी ए मेरी पतरी कमर नारो झुब्बादार लाइयो झुब्बादार लाइयो करेलीदार लाइयो ऐ मेरी पतरी कमर.....

				काची अम्बली गदराई सामण मैं बुड्ढी री लुगाई मस्ताई फागण मैं कहियो री उस ससुर मेरे नै बिन घाली लेजा फागण मैं
	रागनी	महिला स्वर में प्रस्तुति ;आधुनिक मंच परद्ध	सामाजिक पीड़ा, विद्रोह, लोकनीति	मां–बाप के घर की लाज रखूं, ससुराल में सबकी बात सहूंयदो घर की दीवार मैं, पर हक किसी का ना कहूं।" छोरी भी किसान की संतान, खेतों में भी देवे हाथय पर नाम चले छोरे का, समाज करे यह बात।" "तेज जमाना तेरी मंद चाल या क्यूकर पार बसावै। जै तूं चाह्वै कदम मिलाणा ना पढ़णै तैं सरमावै।"
	धार्मिक अनुष्ठान	स्त्री की भूमिका धार्मिक और पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन तक सीमित	रीति–रिवाजों में स्त्री उपस्थिति विवाह, सौंदर्य, लज्जा	आरता ए आरता संझा माई आरता. आरता के फूल चमेली की डाल्ही. नौ नौ नोरते दुरगा माई के सोलां कनागत पितरां केध जाग सांझी जाग तेरै मात्थे लाग्या भाग पीली पीली पट्टिआं सदा सुहाग कोरो घड़ियों बीरा पीली हल्दी नौतण आई भातई मेरे घर आइए बीरा मेरा मां का जाया मेरे घर बिरद उपाइये

तालिका : 1.2

हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रमुख प्रदर्शन कलाएँ सांग, फाग, रागनी में स्त्री सहभागितारू स्त्री की भूमिका का लिंग आधारित विश्लेषण

प्रदर्शन कला	**स्त्री की उपस्थिति**	**भूमिका का स्वरूप**	**प्रमुख प्रतीक ६ संवाद**	**लिंग आधारित विशेषता**	**सांस्कृतिक नियंत्रण के संकेत**
सांग	प्रतीकात्मक ६ पुरुष द्वारा निभाई गई	गौण, सहायक	त्याग, भक्ति, पतिव्रता	पुरुष दृ ष्टिकोण से कथानक	मंच पर स्त्री अनुपस्थित
फाग / पारम्परिक नृत्य	प्रत्यक्ष, समूहिक	सामूहिक भावनात्मक अभिव्यक्ति	प्रेम, ऋतु, सामाजिक जीवन	स्त्री अनुभवों की झलक	परंपरागत सीमाओं में
रागनी	सीमित, अक्सर पुरुष कलाकार	भावनात्मक, नैतिक	मर्यादा, सेवा, सहनशीलता	पितृसत्तात्मक भाषा	नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से नियंत्रण
धार्मिक अनुष्ठान	प्रत्यक्ष, समूहिक6ी				

सांग : पुरुष दृष्टि से स्त्री का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरणरू प्रस्तुत शोध पत्र में लोकप्रिय हरियाणवी सांगों जैसे कि श्राजा हरिश्चंदरश, श्सत्यवानदृसावित्रीश, श्पूरन भगतश, श्राजा गोपीचंदश, श्हीरदृ रांझाश, श्चीर हरणश, श्मीराबाईश, श्लीलो चमनश, श्अमर सिंह राठौड़श और श्ज्याणी चोरश का विश्लेषण किया गया है। सांग हरियाणा की प्रमुख लोकनाट्य परंपरा है, जो सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक प्रसंगों को संवाद, गीत और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करती है। सांग लोकजीवन की नैतिकता, परिवार, स्त्री पात्रों की सामाजिक स्थिति और ग्रामीण जीवन के भावनात्मक संसार को उजागर करता है। मास्टर नेकीराम जैसे लोककवि ने अपने सांगों में स्त्री के दैवीय और शुभtpwण् रूप का चित्रण किया है, जो समाज में स्त्री के उच्चतम सम्मान का प्रतीक है परंतु सांग की मंचीय संरचना में स्त्री का वास्तविक अभाव दृष्टिगोचर होता है। अधिकांश सांगों में स्त्री पात्रों की भूमिका पुरुष कलाकार निभाते हैं, जिससे यह कला रूप पुरुष दृ ष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने लगता है। संवादों में स्त्री प्रायः त्याग, भक्ति और पतिव्रता का प्रतीक होती है, जो पितृसत्तात्मक नैतिकता को सुदृढ़ करता है। मंच पर स्त्री की अनुपस्थिति केवल सामाजिक मर्यादाओं का परिणाम नहीं, बल्कि यह भी इंगित करती है कि लोक—पुरुष जगत में स्त्री का अस्तित्व केवल कथानक की प्रेरक शक्ति तक सीमित है। उदाहरणरू कुछ सांगों में सीता या मीरा जैसे चरित्रों को भक्ति और त्याग के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, परन्तु उनके स्वप्न, संघर्ष और आवाज मंच पर नहीं सुनाई देते।

फागध पारम्परिक नृत्य : स्त्री अनुभवों की सामूहिक अभिव्यक्तिरू प्रस्तुत शोध–पत्र में "कविता कोष" में संकलित 50 से 60 लोकप्रिय फाग/पारम्परिक नृत्य को अध्ययन–सामग्री के रूप में लिया गया है। फाग या पारम्परिक नृत्य में स्त्रियों की सामूहिक गायन एवं नृत्य की भागीदारी सांस्कृतिक, सामाजिक, और भावनात्मक रूप से अत्यंत समृद्ध होती है। इस नृत्य के माध्यम से स्त्रियां प्रेम, उल्लास, हास्य, पारिवारिक रिश्तों, सामाजिक संवाद, शरीर और सौंदर्य के उत्सव को व्यक्त करती हैं। फाग गीतों में सामूहिक्ता और संवाद की जीवंत परंपरा रही है, जिसमें स्त्रियाँ अपने जीवन के विभिन्न सामाजिक पक्षों को गीत और हंसी–मजाक के साथ प्रस्तुत करती हैं। फाग नृत्य की परंपरा महिलाओं के सामाजिक स्थान, पारिवारिक जीवन की जटिलताओं, और प्रेमोत्सव की सामूहिक अभिव्यक्ति को दर्शाती है। यह नृत्य ग्रामीण जीवन की धड़कन है, जो सामाजिक एकता, सांस्कृतिक विरासत और स्त्री सशक्तिकरण का उत्सव मनाती है।

रागनीः प्रस्तुत शोध–पत्र में "कविता कोष" में संकलित 50 से 60 लोकप्रिय हरियाणवी रागनियों को अध्ययन–सामग्री के रूप में लिया गया है। इन रागनियों का चयन उनके विषयगत विविधता (सामाजिक पीड़ा, प्रतिरोध, लोकनीति, प्रेम, परिवार–संघर्ष) तथा महिला स्वर की उपस्थिति के आधार पर किया गया। प्रत्येक रागनी का पाठ–विश्लेषण कर यह समझने का प्रयास किया गया कि हरियाणवी लोकभाषा में स्त्री–अनुभव कैसे रूपायित हुआ है। हरियाणा की लोककाव्य परंपरा रागनी, भावनात्मक और नैतिक शिक्षाओं से ओतप्रोत होती है। रागनी में स्त्री का चित्रण मुख्यतः संस्कारों और मर्यादाओं के माध्यम से किया जाता है। लक्ष्मी चंद, मेघराज और दया राम जैसे रागनीकारों की रचनाओं में स्त्री को "घर की लाज," "मर्यादा की मूर्ति" और "सेवा की प्रतिमा" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हरियाणवी रागनी, सांग से उत्पन्न लोक-गायन शैली, प्रारंभिक दौर में महिला पात्रों को मुख्यतः सौंदर्य, श्रृंगार और प्रेमाख्यान के माध्यम से प्रस्तुत करती थी। मीराबाई जैसे स्वतंत्र महिला पात्र समाज और राज व्यवस्था की आलोचना करती थीं, जबकि सत्यवानदृसावित्री और दमयन्ती जैसी नायिकाओं को आदर्श स्त्री के रूप में दिखाया गया। पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से खलनायिकाओं को नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया। आर्य समाज और इमरजेंसी के बाद प्रगतिशील विचारधारा ने रागनी में महिला स्वर और सामाजिक–साक्षरता का योगदान बढ़ाया। कलाकारों ने दलित महिलाओं, घरेलू हिंसा, भ्रूण हत्या और नशाखोरी के खिलाफ प्रतिरोध के स्वर प्रस्तुत किए। आज रागनी में स्त्री विमर्श बदल गया है, लेकिन बाजार ने महिलाओं को प्रदर्शनकारी वस्तु के रूप में पेश करना शुरू किया है। इसलिए लोककलाओं को महिलाओं के दृष्टिकोण और सामाजिक संघर्ष के अनुरूप प्रस्तुत करना आवश्यक है।

धार्मिक अनुष्ठान : धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्श के रूप में स्त्रीः हरियाणा की लोकपरंपरा में व्रत, पूजा और विवाह संबंधी गीतों का प्रतीक है। इसमें स्त्री की भूमिका धार्मिक और पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन तक सीमित रहती है। गीतों में स्त्री को "पतिव्रता," "धर्मनिष्ठ" और "परिवार की रक्षक" के रूप में आदर्शीकृत किया जाता है। यह परंपरा स्त्री को सामाजिक अनुशासन में बाँधने का सांस्कृतिक उपकरण बन जाती है। उदाहरणरू पर्व पर गाए जाने वाले गीतों में स्त्रियाँ शिव–पार्वती के दांपत्य को आदर्श मानकर अपने वैवाहिक जीवन की मंगलकामना करती हैं यहाँ स्त्री की धार्मिक भूमिका प्रमुख है, न कि उसकी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति। हरियाणवी लोक संस्कृति में शादी और जन्म संबंधी रीति–रिवाजों में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी होती है। महिला न केवल अनुष्ठानों और संस्कारों की मुख्य परिचालिका होती है,

बल्कि समाजिक, धार्मिक और पारिवारिक ढांचे को बनाए रखने में भी उसकी भूमिका केंद्रीय होती है।

इन चारों लोक प्रदर्शन कलाओं के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हरियाणवी लोकसंस्कृति में स्त्री की भूमिका भावनात्मक केंद्र तो है, परंतु मंचीय और सामाजिक नियंत्रण पुरुष–प्रधान संरचनाओं द्वारा संचालित होता है। सांग और रागनी में स्त्री का चित्रण मुख्यतः पुरुष दृष्टिकोण से निर्धारित होता है। फाग एकमात्र ऐसा माध्यम है, जहाँ स्त्रियाँ स्वयं अपनी आवाज बनती हैं। धार्मिक अनुष्ठान स्त्री की छवि धार्मिक और सांस्कृतिक अनुशासन की वाहक के रूप में उभरती है। अतः यह कहा जा सकता है कि हरियाणवी प्रदर्शन कलाएँ स्त्री के अस्तित्व को नियंत्रण और आदर्श के प्रतीक के रूप में भी गढ़ती हैं।

2. हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति का सांस्कृतिक स्तर पर विश्लेषणः यह दृष्टिकोण समाज की परंपराओं, रीति–रिवाजों, प्रतीकों और कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से स्त्री की भूमिका और उसके सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व को समझने पर केंद्रित है। हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति सांस्कृतिक संदर्भों से गहराई से जुड़ी हुई है। यह उपस्थिति स्त्री की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक चेतना के प्रतिरोध का माध्यम भी बनती है। हरियाणवी लोक कलाओं में मंच पर नारी की उपस्थिति कभी सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाओं को चुनौती देते हुए प्रतिरोध व्यक्त करती है, तो कभी पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और सांस्कृतिक अपेक्षाओं का पुनरुत्पादन करती है

तालिका

हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति का सांस्कृतिक विश्लेषण : प्रतिरोध बनाम पुनरुत्पादन

पहलू	पुनरुत्पादन	गीत/संवाद (उदाहरण)	प्रतिरोध	गीत/संवाद (उदाहरण)	टिप्पणियाँ/ विश्लेषण
मंच पर नारी की भूमिका	सीमित, सहायक, सामाजिक नियमों के अनुसार निर्धारित	"नारी घर की लाज रखे, पति सेवा में जीवन कटे" ;सांग संवाद**द्ध**	भावनाओं, इच्छाओं और संघर्षों की अभिव्यक्ति के अवसर	"मन तो मेरा उड़न चाहै, पर बाँध दिए पंख समाज ने" ;रागनी का भाव**द्ध**	सांग में स्त्री पात्रों को प्रायः पुरुष कलाकार निभाते हैंय कुछ रागनियों में स्त्री की आंतरिक पीड़ा व्यक्त होती है।

दोहरी सांस्कृतिक प्रवृत्ति	पितृसत्तात्मक सांस्कृतिक मान्यताओं का पुनरावर्तन	"नारी धरम की मूर्ति, सास–ससुर की सेवा करै" ;लक्ष्मी चंद की रागनीद्ध	परंपरागत सीमाओं के भीतर नई सामाजिक चेतना का संचार	"हम भी खेलन फाग में आवें, हँसीं के संग गुन गाएँ" ;फाग गीतद्ध	फाग में स्त्रियाँ सामूहिक रूप से अपनी सामाजिक पहचान प्रकट करती हैंय यह सांस्कृतिक प्रतिरोध का सूक्ष्म रूप है।
सामाजिक संदेश	स्त्री की भूमिका को आदर्शित करना और सामाजिक मर्यादाओं की पुष्टि	"पति की सेवा ही धर्म है, नारी का यही सिंगार"	स्त्री के संघर्ष और भावनात्मक अनुभवों को उजागर करना	"सास बोले कठोर, मन बोले धीरेय किसे कहूँ अपनी पीर रे" ;लोकगीतद्ध	लोकगीतों में स्त्री की सहनशीलता और त्याग को दिखाते हुए उसकी व्यथा भी झलकती है।
मंचीय नियंत्रण	पुरुष कलाकारों और दर्शकों द्वारा नियंत्रित	"स्त्री मंच पर ना आवै, लाज समाज की रहै"	स्त्री की आवाज उठाने का संभावित माध्यम	"अब हम भी कहसैं अपनी बात, सुन ले गाव का चौपाल" ;फाग संवादद्ध	कुछ क्षेत्रों में अब स्त्रियाँ स्वयं सांग और फाग में भाग लेने लगी हैं कृ यह प्रतिरोध का संकेत है।
संवाद और भाषा	पुरुष दृष्टिकोण और पितृसत्तात्मक भाषा	"नारी बस सेवा को जनमी"	स्त्री की आत्म–अभिव्यक्ति की संभावनाएँ	"मन की पीर सुनावे तो कौन समझे, खुद की बोली बोलूँ मैं आज"	लोकभाषा में स्त्री की व्यथा और आत्मस्वर धीरे–धीरे उभर रहा है, विशेषकर समकालीन रागनियों में।

सांस्कृतिक सीमाएँ	सामाजिक नियमों द्वारा स्त्री की भूमिका सीमित करना	"घर की चौखट से बाहर नारी का काम नहीं"	सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देना या पुनर्परिभाषित करना	"म्हारी बोली भी लोक की बोली सै, म्हारे गीत भी सबकी कहानी सै"	आधुनिक हरियाणवी मंचों पर स्त्री भागीदारी बढ़ रही है कृ यह पारंपरिक नियंत्रणों के पुनर्परिभाषण का संकेत है।

यह तालिका दर्शाती है कि हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की भूमिका दोहरी सांस्कृतिक प्रवृत्ति के अंतर्गत विकसित हुई है एक ओर, वह पितृसत्तात्मक मर्यादाओं के पुनरुत्पादन का साधन बनती हैय दूसरी ओर, लोकगीतों और फाग जैसी विधाओं में उसकी आवाज प्रतिरोध का माध्यम बन जाती है। नारी न तो पूर्णतः नियंत्रित है, न पूर्णतः मुक्त बल्कि वह संस्कृति के भीतर से अपनी स्वतंत्र पहचान का निर्माण कर रही है। तालिका के अनुसार, सांग में मंचीय नियंत्रण भी मुख्यतः पुरुषों के हाथ में रहा है। पुरुष कलाकार ही स्त्री की अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं, जिससे उसके अनुभवों की प्रामाणिकता और भावनात्मक गहराई कम हो जाती है। लोकगीतों और रागनियों में स्त्री की भावनाओं, इच्छाओं और संघर्षों का कुछ हद तक खुलेआम अभिव्यक्त होना यह दर्शाता है कि यह मंच स्त्री की आवाज उठाने का संभावित माध्यम भी हो सकता है।हरियाणवी लोक संस्कृति का मंच केवल दमन का स्थल नहीं हैय यह प्रतिरोध और पुनर्परिभाषा का भी माध्यम है। आधुनिक रागनियों और फागों में स्त्रियाँ न केवल सक्रिय प्रतिभागी हैं, बल्कि वे अपनी भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को मुखर रूप से व्यक्त करती हैं। उदाहरण के लिए, आधुनिक रागनी "मैं घूंघट ना ओढूं रे३" पारंपरिक मर्यादाओं को चुनौती देती है। यह केवल गीत नहीं, बल्कि स्त्री की स्वतंत्रता का सांस्कृतिक उद्घोष है। इसी प्रकार, फाग की स्त्रियाँ हास्य–व्यंग्य के माध्यम से पुरुष सत्ता की आलोचना करती हैं कृ "सासुजी ने घूंघट उठवाया, अब बोलूं खुल्लमखुल्ला..." जैसी पंक्तियाँ स्त्री की आत्म–अभिव्यक्ति का परिचायक हैं। इन कलाओं में स्त्रियाँ सामूहिक रूप से भाग लेती हैं, जो सामुदायिक एकजुटता का प्रतीक है। यह सहभागिता स्त्री को केवल 'सांस्कृतिक पात्र' नहीं, बल्कि 'सांस्कृतिक निर्माता' के रूप में स्थापित करती है। संवाद और प्रतीकों का विश्लेषण यह दिखाता है कि स्त्री की भाषा दोहरी है एक ओर वह सामाजिक नियंत्रण का पालन करती है, वहीं दूसरी ओर वह उसके भीतर से ही प्रतिरोध की संभावना तलाशती है। हाल के वर्षों में हरियाणवी लोक मंचों पर नारी की भागीदारी में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। महिला कलाकार अब स्वयं मंच संभाल रही हैं, गीत लिख रही हैं, और अपनी रचनाओं में सामाजिक अन्याय, दहेज, शिक्षा और लैंगिक समानता जैसे मुद्दे उठा रही हैं। नुक्कड़ नाटकों में यह परिवर्तन विशेष रूप से स्पष्ट है। "बेटी पढ़ाओ, बहू समझाओ" जैसे प्रचार गीतों और नाटकों में स्त्री स्वयं सामाजिक संदेश की वाहक बनती है। यह मंच अब केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि "सामाजिक संवाद" का रूप ले चुका है। इस प्रकार, हरियाणवी प्रदर्शन कलाओं में स्त्री अब दर्श्य नहीं, बल्कि दर्शक और द्रष्टा दोनों बन रही है। वह संस्कृति को न केवल पुनरावृत्त कर रही है, बल्कि नए अर्थ भी गढ़ रही है। कुल मिलाकर, हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में नारी की उपस्थिति को एक रैखिक ढंग से नहीं

समझा जा सकता। यह एक "द्वंद्वात्मक सांस्कृतिक प्रक्रिया" है जहाँ पितृसत्ता और प्रतिरोध, मर्यादा और स्वतंत्रता, मौन और मुखरता एक साथ विद्यमान हैं। यह समाज की वास्तविकता को भी प्रकट करता है जहाँ परिवर्तन की लहरें हैं, लेकिन पारंपरिक मूल्यों की जड़ें भी गहरी हैं। इसलिए, नारी का मंचीय रूप केवल सांस्कृतिक प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक विमर्श का भी प्रतिबिंब है। ह इस प्रकार, नारी की उपस्थिति को न तो केवल "पुनरुत्पादन" कहा जा सकता है, न ही केवल "प्रतिरोध" बल्कि यह दोनों के बीच की निरंतर सांस्कृतिक यात्रा है, जो हरियाणवी समाज में स्त्री की बदलती भूमिका और उसके आत्म–संघर्ष की जीवंत गाथा कहती है।

3. हरियाणवी लोक संस्कृति में संवादों, प्रतीकों और प्रस्तुतियों का लिंग आधारित विश्लेषणः यह अध्ययन हरियाणवी लोक संस्कृति की संवादों, प्रतीकों और मंचीय प्रस्तुतियों में लिंग आधारित भूमिकाओं, नियंत्रण और सांस्कृतिक संकेतों को पहचानने और विश्लेषित करने पर केंद्रित है। इसमें यह देखा जाएगा कि किस प्रकार पुरुष और स्त्री पात्रों की आवाज, अभिव्यक्ति और भूमिका समाज के पितृसत्तात्मक नियमों और लैंगिक मानदंडों का प्रतिबिंब हैं, और किन अवसरों पर स्त्रियाँ इन कलाओं के माध्यम से अपने अधिकार, भावनाएँ और सामाजिक चेतना व्यक्त करती

तालिका :
लिंग आधारित सांस्कृतिक तत्व और उनका विश्लेषण

तत्व	लिंग आधारित विशेषता	उदाहरण	गीतध्संवाद ६ प्रतीक का अंश	टिप्पणी ६ विश्लेषण
संवाद	पुरुष पात्रों की वाणी अधिक अधिकारपूर्ण और निर्णायक	पुरुष निर्णयकर्ता, स्त्री भावुक और सहनशील संवाद	"म्हारा राज चलै गाँव में" ६ "मैं तो परदे में ही भली लगूं"	पुरुष का प्रभुत्व और स्त्री की आज्ञापालन की भूमिका स्पष्ट
प्रतीक	स्त्री के वस्त्र, आभूषण मर्यादा, पवित्रता के प्रतीक	मांगटीका, पायल, साड़ी	"लाल चुनरी से लाज बचाऊं"	प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक सीमाएं और स्त्री की मर्यादा स्थापित होती हैंय पुरुष प्रतीक ;तलवार, पगड़ीद्ध साहस और शक्ति दर्शाते हैं
मंचीयप्रस्तुतियाँ	स्त्री की भूमिका सीमित, पुरुष मुख्य कथावाचक	सांग में पुरुष नायक, स्त्री सहायक पात्र	ऋत्ऋ	सामाजिक भूमिका और सीमाओं का मंचीय प्रस्तुतीकरणय स्त्री पात्र अक्सर सहायक और गौण रहते हैं

भाषा शैली	पुरुषों की भाषा औपचारिक, स्त्रियों की भाषा भावनात्मक	पुरुष संवाद कठोर और स्पष्ट, स्त्री संवाद कोमल	ऋऋ	लिंग आधारित भाषा अंतर स्पष्टय पुरुष संवाद में अधिकार और निर्णय, स्त्री संवाद में भावना और संवेदनशीलता प्रकट होती है
कथा संरचना	कथा का निर्माण पुरुष दृष्टिकोण से, स्त्री चुप्पी और त्याग की भूमिका में	लोककथा दृ "धीरणी की कथा"	स्त्री दृ त्याग और चुप्पी, पुरुष दृ निर्णय और संवाद प्रधान	कथा संरचना में पुरुष को सक्रिय और निर्णायक, स्त्री को सहायक या प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है

डेटा विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संवादों में पुरुष पात्रों की वाणी अधिक अधिकारपूर्ण और निर्णायक होती है, जबकि स्त्रियों की भाषा भावनात्मक, विनम्र और त्यागी होती है। उदाहरण स्वरूप, रागनी और लोकगीतों में स्त्री पात्रों के संवाद अक्सर मर्यादा, त्याग और सहनशीलता पर केंद्रित होते हैं। सांकेतिक तत्व जैसे कि मांगटीका, पायल, साड़ी स्त्री की मर्यादा और सामाजिक स्थिति को प्रदर्शित करते हैं, जबकि पुरुष पात्रों के प्रतीक शक्ति, अधिकार और प्रभुत्व को दर्शाते हैं। इन प्रतीकों और भाषा शैली से यह स्पष्ट होता है कि लोक कला समाज में लिंग आधारित असमानताओं को दृश्य रूप से प्रस्तुत करती है और उन्हें स्थायित्व प्रदान करती है। हरियाणवी लोक संस्कृति की प्रदर्शन कलाओं में संवाद, प्रतीक और प्रस्तुतियाँ लिंग आधारित सामाजिक संरचनाओं का प्रतिबिंब हैं। ये माध्यम न केवल सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को दर्शाते हैं, बल्कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था को भी पुष्ट करते हैं। संवादों में अक्सर पुरुष पात्रों की वाणी प्रधान होती है, जबकि स्त्री पात्रों की भाषा भावनात्मक, त्यागी और सहनशील होती है।प्रतीक, जैसे वस्त्र, रंग, आभूषण और मंचीय सजावट, स्त्री–पुरुष के सांस्कृतिक और सामाजिक भेद को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के तौर पर, स्त्री के वस्त्र और आभूषण उसकी मर्यादा और सामाजिक स्थिति का प्रतीक होते हैं, वहीं पुरुषों के प्रतीक शक्ति और अधिकार की अभिव्यक्ति करते हैं। तालिकाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हरियाणवी लोक संस्कृति में संवाद, प्रतीक और प्रस्तुतियाँ न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि वे लिंग आधारित सामाजिक संरचना का दर्पण भी प्रस्तुत करती हैं। पुरुष पात्रों के संवाद और प्रतीक अधिक अधिकारपूर्ण और निर्णायक होते हैं, जबकि स्त्री पात्र भावनात्मक, सहनशील और मर्यादित भूमिका में प्रस्तुत होती हैं। मंचीय प्रस्तुतियों में पुरुष मुख्य कथावाचक होते हैं, जबकि स्त्री सहायक या प्रतीकात्मक पात्र के रूप में दिखाई देती है। कथा संरचना, भाषा शैली और प्रतीकों के माध्यम से समाज में लिंग आधारित विभाजन और सांस्कृतिक सीमाएँ स्पष्ट रूप से स्थापित होती हैं। हालांकि, कुछ लोकगीत और रागनियाँ स्त्री के संघर्ष, भावनाओं और इच्छाओं को व्यक्त करने का अवसर देती हैं, जो संस्कृति के भीतर प्रतिरोध और नव–सृजन के संकेत प्रदान करती हैं। इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि हरियाणवी लोक प्रदर्शन कलाओं में स्त्री की उपस्थिति न केवल संस्कृति के पुनरुत्पादन का माध्यम है, बल्कि यह

प्रतिरोध और सामूहिक चेतना का भी प्रतीक है अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आधुनिक समय में हरियाणवी लोक प्रस्तुतियों में स्त्री की भूमिका धीरे–धीरे बदल रही है। महिला कलाकारों की प्रत्यक्ष भागीदारी, नए गीत और नाटकीय विषयवस्तु स्त्री को अधिक सशक्त और निर्णायक रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह बदलाव सामाजिक चेतना और समान अधिकारों के प्रति बढ़ती जागरूकता का संकेत है। लोक संस्कृति में यह परिवर्तन दर्शाता है कि पारंपरिक सीमाओं के भीतर भी नारी अपनी पहचान और अधिकारों के लिए प्रयासरत है। इस संदर्भ में, लोक कला केवल सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और नारी सशक्तिकरण का उपकरण बन रही है।

निष्कर्ष : हरियाणवी लोक कलाओं में नारी की भूमिका द्वैतात्मक है एक ओर सामाजिक पुनरुत्पादन और सीमाएँ, दूसरी ओर प्रतिरोध और सशक्तिकरण। संवाद, प्रतीक और प्रस्तुति शैली लिंग आधारित असमानताओं को स्पष्ट करती है। सांस्कृतिक नियंत्रण के बावजूद, लोक मंच स्त्रियों को सशक्त अभिव्यक्ति और सामाजिक चेतना के अवसर प्रदान करता है। आधुनिक लोक प्रस्तुतियाँ स्त्री की भूमिका को पुनर्परिभाषित कर रही हैं और उसे पारंपरिक सीमाओं से ऊपर उठने का अवसर देती हैं।

References :

- Bloomfield, L. (1978). *Language and cultural expression*. New York, NY: Holt, Rinehart & Winston.
- Butler, J. (1990). *Gender trouble: Feminism and the subversion of identity*. New York, NY: Routledge.
- Chopra, R. (2018). *Women in folk arts: Social empowerment in rural India*. Cultural Studies Press.
- Dahiya, B. K. (2020). *Haryanvi Saang me Stree Patra aur SanskritikPratibimb*, Bal Kishan Dahiya, Folklore Research Journal, 2020.
- Gaur, V. (2018). Conditioning of Subaltern: Gender in Haryanvi Folktales. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 5*(3), 11–23.
- Gupta, R. (2016). Women's Participation in Folk arts and Festivals: A Sociocultural Sudy. *Indian Journal of Cultural Heritage, 5*(2), 33–41.
- Horton, P. B., & Hunt, C. L. (1982). *Sociology* (9th ed.). New York, NY: McGraw-Hill.
- Kaur, P., & Sinha, A. (Eds.). (2019). *Women in Indian performance traditions*. Sage Publications.
- Khandelwal, S. (2018). Gender roles in Indian Folk Performing Arts. *Indian Journal of Cultural Studies, 12*(3), 45–60.
- Kumar, D. (2017). A Peasant woman's ballad from Haryana in North India. *Asian Folklore Studies, 76*(1), 1–21.
- Kumar, D. (2023). Representation of Females and Culture in the Haryanvi Ragnis. *International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 12*(5), 1–10.
- Kumar, R. (2020). Selected Haryanvi Folksongs of Women: A Critical Analysis. *Literary Herald, 6*(3), 159–170.

- Manisha. (2023). Representation of Females and Culture in the Haryanvi Ragnis: A sociological study. *International Journal of Modern Engineering Research, 12*(5), 52–58.
- Meena, P., & Rathi, K. (2019). Patriarchy and Representation of Women in Haryana Folk Arts. *Journal of Social Research, 15*(2), 78–92.
- Parsons, T. (1951). *The Social System*. Glencoe, IL: Free Press.
- Punia, D., & Sharma, D. L. (2011). Leisure Folksongs and Women of Haryana—A Sociological study. *World Leisure & Recreation, 33*(2), 9–12.
- Punia, V. (2025). A Critical study of Women's Representation in Haryanvi Folk culture. *Asha Paras International Journal of Gender Studies, 1*(1), 118–130.
- Sharma, A. (2019). *Women folk artists of Haryana: A new form of cultural consciousness*. New Delhi: Sahitya Prakashan.
- Sharma, S. (2020). Role of Women in Folk arts: Cultural and Religious perspectives. *International Journal of Social and Cultural Studies, 8*(3), 45–52.
- Sharma, S. (2024). Development of Haryanvi folklore music by women. *EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal, 13*(1), 112.
- Sharma, V. (2020). *Cultural symbolism and gender in Haryana's folk traditions*. Haryana University Press.
- Singh, B., &Attri, S. (2023). Folk songs: Reviving the voices of Haryanvi women. *The Literary Herald, 8*(5), 32–41.
- Singh, B., & Kumar, R. (2019). Rural Folk arts and Women's Participation: Family and Community recognition in Haryana. *Journal of Cultural Studies and Folk Arts, 7*(2), 45–53.
- Singh, M. (2017). Social acceptance of women performers in rural Haryana. *Journal of Rural Studies, 10*(1), 22–35.
- Yadav, R. (2021). Cultural constraints on women in Indian folk arts. Rajasthan Folklore Institute.
- Yadav, S. (2018). *Haryana keSaang me Stree ki Bhumika: Samvedna aur Pradarshan ka Adhyayan* [Role of women in Haryana Saang: A study of emotion and performance] (Unpublished doctoral dissertation). Kurukshetra University.